कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे सादिरेयतिण्णिरूवोवलंभादो ।

तेउलेस्सिया पम्मलेस्सिया सुक्कलेस्सिया सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ७१ ॥

सुगमं ।

अणंतभागो ॥ ३८ ॥

कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिया सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ७३ ॥

सुगमं ।

अणंता भागा ॥ ७४ ॥

कुदो ? भवसिद्धिएहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे एगरूवस्स अणंतभागसहिदएगरूवोवलंभादो ।

क्योंकि, इन जीवोंका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर साधिक तीन रूप उपलब्ध होते हैं ।

तेजोलेश्यावाले, पद्मलेश्यावाले और शुक्ललेश्यावाले जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ७१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीव सब जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ ७२ ॥

क्योंकि, इन जीवोंका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर अनन्त रूप प्राप्त होते हैं ।

भव्यमार्गणाके अनुसार भव्यसिद्धिक जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ७३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

भव्यसिद्धिक जीव सब जीवोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ ७४ ॥

क्योंकि, भव्यसिद्धिक जीवोंका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर एक रूपके अनन्तवें भाग सहित एक रूप उपलब्ध होता है ।

अभवसिद्धिया सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ७५ ॥

सुगमं ।

अणंतभागो ॥ ७६ ॥

कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी खइयसम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी उवसमसम्माइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ॥ ७७ ॥

सुगमं ।

अणंतो भागो ॥ ७८ ॥

(कुदो[1] ? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।)

मिच्छाइट्ठी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ७९ ॥

अभव्यसिद्धिक जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ७५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अभव्यसिद्धिक जीव सब जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ ७६ ॥

क्योंकि, इनका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर अनन्त रूप उपलब्ध होते हैं ।

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुसार सम्यग्दृष्टि, क्षायिकसम्यग्दृष्टि, वेदकसम्यग्दृष्टि, उपशमसम्यग्दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ७७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीव सब जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ ७८ ॥

(क्योंकि, इनका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर अनन्त रूप उपलब्ध होते हैं ।

मिथ्यादृष्टि जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ७९ ॥

---

१. अ. ब. ए. प्रतिषु कोष्ठस्थः पाठो नोपलभ्यते ।

सुगमं

अणंता भागा ॥ ८० ॥)

कुदो ? मिच्छाइट्ठीहि फलगुणिदसव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे एगरूवस्स अणंतभागसहिदएगरूवोवलंभादो ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ८१ ॥

सुगमं ।

अणंतभागो ॥ ८२ ॥

कुदो ? एदेहि फलगुणिदसव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

असण्णी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ८३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि जीव सब जीवोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ ८० ॥)

क्योंकि, मिथ्यादृष्टियोंका फलगुणित सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर एक रूपके अनन्त भागसे सहित एक रूप उपलब्ध होता है ।

विशेषार्थ— यहां जो सर्व जीवराशिको फलसे गुणित करके मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित करनेको कहा गया है उससे टीकाकारका अभिप्राय उक्त प्रक्रियाको त्रैराशिक रीतिसे व्यक्त करनेका रहा जान पडता है । यदि मिथ्यादृष्टि राशि एक शलाका प्रमाण है तो सर्व जीवराशि कितने शलाका प्रमाण होगी ? इस त्रैराशिकके अनुसार सर्व जीव राशिमें फल राशि रूप एकका गुणा और प्रमाण राशि रूप मिथ्यादृष्टि राशिसे भाग देनेपर उक्त भजनफल प्राप्त होगा ।

संज्ञिमार्गणानुसार संज्ञी जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ८१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संज्ञी जीव सब जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ ८२ ॥

क्योंकि, इनका फलगुणित सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर अनन्त रूप उपलब्ध होते हैं ।

असंज्ञी जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ८३ ॥

सुगमं ।

अणंता भागा ॥ ८४ ॥

कुदो ? असण्णीहि फलगुणिदसव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे सगअणंतभागसहिद-एगसलागोवलंभादो ।

आहाराणुवादेण आहारा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ८५ ॥

सुगमं ।

असंखेज्जा भागा ॥ ८६ ॥

कुदो ? एदेहि फलगुणिदसव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे सगअसंखेज्जदिभाग-सहिदएगसलागोवलंभादो ।

अणाहारा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ८७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंज्ञी जीव सब जीवोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ ८४ ॥

क्योंकि, असंज्ञी जीवोंका फलगुणित सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर अपने अनन्त भाग सहित एक शलाका उपलब्ध होती है ।

आहारमार्गणाके अनुसार आहारक जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ८५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारक जीव सब जीवोंके असंख्यात बहुभागप्रमाण हैं ॥ ८६ ॥

क्योंकि, इनका फलगुणित सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर अपने असंख्यातवें भाग सहित एक शलाका उपलब्ध होती है ।

अनाहारक जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ८७ ॥

सुगमं ।

असंखेज्जदिभागो ॥ ८८ ॥

कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जसलागोवलंभादो ।

एवं भागाभागाणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

यह सूत्र सुगम है ।

अनाहारक जीव सब जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ ८८ ॥

क्योंकि, इनका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर असंख्यात शलाकायें उपलब्ध होती हैं ।

इस प्रकार भागाभागानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

बादरआउकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८२ ॥

गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

बादरवाउकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८३ ॥

गुणगारो असंखेज्जाओ सेडीओ पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । हेट्ठिमरासिणा उवरिमरासिमोवट्टिय सव्वत्थ गुणगारो उप्पाएदव्वो ।

बादरतेउअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८४ ॥

गुणगारो असंखेज्जा लोगा । गुणगारद्धच्छेदणयसलागाओ सागरोवम पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणयं ।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥८५॥

गुणगारपमाणमसंखेज्जा लोगा । गुणगारद्धच्छेदणयसलागाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे बादर अप्कायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ८२ ॥

गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है । कारण पहिलेके समान कहना चाहिये ।

बादर अप्कायिक पर्याप्तोंसे बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ८३ ॥

यहां गुणकार प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात जगश्रेणी है । अधस्तन राशिसे उपरिम राशिका अपवर्तन कर सर्वत्र गुणकार उत्पन्न करना चाहिये ।

बादर वायुकायिक पर्याप्तोंसे बादर तेजस्कायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ८४ ॥

यहां गुणकार असंख्यात लोक है । गुणकारकी अर्द्धच्छेदशलाकायें पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन सागरोपमप्रमाण हैं ।

बादर तेजस्कायिक अपर्याप्तोंसे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ८५ ॥

गुणकारका प्रमाण असंख्यात लोक है । गुणकारकी अर्द्धच्छेदशलाकायें पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।